केदारनाथ अग्रवाल (Lec-29)

डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य
पेपर - 04

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि होने के कारण इनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने वाली मौलिक और प्रौढ रचनाएं मिलती है। सामाजिक चेतना के भौतिक दर्शन और क के क्षेत्र में व्यापक जीवन के प्रति रागात्मक वृत्ति इनके प्रगतिवादी काव्य की विशेषताओं के अंतर्गत आता है।

कवि केदारनाथ अग्रवाल का मानना है कि मानवीय चेतना आदिकाल से अब तक विकसित होती चली आई है। प्रतिबद्धता उसे विकास की ओर उन्मुख करती है इसलिए प्रतिबद्धता से घबराने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है।

केदारनाथ अग्रवाल प्रेम, प्रकृति और मित्रता के कवि हैं, मनुष्यविरोधी राजनीति को समझने वाले एक सचेत कवि। उनकी एक कविता के सहारे कहा जाए तो केदार समय की धार में धंस कर खड़े हैं और निरंतर हथौड़ा चलाते

Scanned with CamScanner

छल से लड़ रहे हैं। नागार्जुन ने एक बार उनसे कहा - 'कि तुम्हारे बाल चिंताओं की धनी भाप से सीझे जाने से पक गए हैं।' केदार ने कहा कि 'जब दुःख - दुविधा की प्रबल आंच से दिमाग उबल रहा हो तो फिर बालों का कालायन एक तरह से मखौल है।'

केदारनाथ अग्रवाल अपनी साठ वर्षों की कविता यात्रा में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सोच की दृष्टि से बहुत सचेत और संवेदनशील कवि के रूप में सक्रिय रहे हैं। वे हिन्दी की प्रगतिशील काव्यधारा के एक मुखर कवि माने जाते हैं। उनकी काव्य प्रकृति को लेकर मनमानी व्याख्याएं करने की गुंजाइश बहुत कम है, जैसे लोग शमशेर की कविता को लेकर निकाल लेते हैं, या मुक्तिबोध में अपनी मनमर्जी का रहस्यवाद ढूँढ लाते हैं। वे प्रेमचंद, निराला, नागार्जुन और त्रिलोचन की ही साहित्य - परंपरा के एक संजीदा कवि कहे जा सकते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने स्वयं अपनी काव्य यात्रा के शुरुआती दिनों को याद करते हुए दो - टूक शब्दों में कहा था - "बहुत पहले मैं जो लिखना चाहता था, वह नहीं लिख पाता था। कठिनाई होती थी, कविता नहीं बन पाती थी। कभी एक पंक्ति ही बन पाती थी। कभी

Scanned with CamScanner

यानि निराला कि 'तोड़ती पत्थर' की कर्मठ स्त्री की छवि की याद दिलाती उनकी यह वीरांगना कविता-

'मैंने उसको जब-जब देखा
लोहा देखा
लोहा जैसे-तपते देखा
गलते-देखा, ढलते देखा
मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा।'

इसी प्रकार उनकी दूसरी बड़ी चिंता यह थी कि हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व अब भी अंग्रेजों की मानसिक गुलामी से मुक्त नहीं है। उन्होंने ऐसे नेताओं को आड़े हाथों लेते हुए कटघरे में खड़ा कर ~~दिया था~~ उन पर तीखे व्यंग्य प्रहार किये-

लंदन गये थे-लौट आये,
बोलो आजादी लाये?
नकली मिली याकि असली मिली?
कितनी दलाली में कितनी मिली?

और यह व्यंग्य उन्होंने आशंका की तरह दिसंबर 1946 में किया था। लेकिन यही जब वास्तविकता बन गई तो उनकी पीड़ा आज़ादी के बाद की कविताओं में और मुखर हो उठी। बेशक उन्होंने आज़ादी का स्वागत किया, लेकिन इस कड़वी सच्चाई को वे कभी नहीं भुला सके। और वह खुद इस तरह व्यक्त हुई-

Scanned with CamScanner

'लंदन में बिक आया नेता, हाथ काटकर आया।
एटली - बेविन - अंग्रेजों में खोया और बिलाया।
भारत मां का पूत सिपाही, पर घर में भरमाया.
अंग्रेजी साम्राज्यवाद का उसने डिनर उठाया --
अर्थनीति में राजनीति में, गहरा गोता खाया
जनवादी भारत का उसने, सब कुछ वहाँ गवाया।'